# ईशोपनिषद्

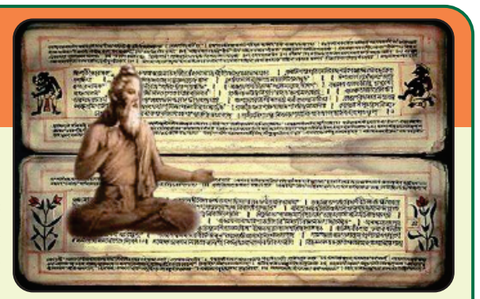

उप, नि, सद्, इन तीन शब्दों को मिलाकर 'उपनिषद्' बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ है - निकट बैठना; जो गुरुकुल परम्परा को दर्शाता है और गुरु-शिष्य के बीच ज्ञान की गंगा का संवाहक है। उपनिषद् में गुरु और शिष्य के बीच गहन संवाद है जो कम शब्दों में बड़ी बात को हम तक पहुंचाता है। उपनिषदों को वैदिक काल से लेकर आज तक भारतीय विचारधारा के सभी पंथों की रीढ़ कहा जा सकता है क्योंकि इनके विचार लगभग सभी भारतीय आध्यात्मिक विचारधारा के केन्द्र में हैं।

आदि शंकराचार्य ने प्रमुख ११ उपनिषदों पर भाष्य किया है। सर्वप्रथम हम ईशोपनिषद् के बारे में जानेंगे। ईशोपनिषद् में अट्ठारह छंद हैं। शुक्ल यजुर्वेद का अंतिम चालीसवां अध्याय होने के कारण इस उपनिषद् का विशेष महत्त्व है। इस उपनिषद् का प्रारम्भ 'ईशावास्यमिदं सर्वम्' से हुआ है इसलिए इसे ईशोपनिषद् या ईशावास्योपनिषद् के नाम से जाना जाता है। भारतीय अध्यात्म में रूचि रखनेवालों के लिए यह छोटा सा ग्रन्थ बहुत उपयुक्त है। यह उपनिषद् अपने लघु स्वरूप के कारण अन्य उपनिषदों के बीच बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। इसमें कोई कथा-कहानी नहीं है केवल आत्म वर्णन है। इस उपनिषद् के पहले श्लोक ''ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्...' से लेकर अठारहवें श्लोक ''...अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्...।'' तक शब्द-शब्द में मानों ब्रह्म-वर्णन, उपासना, प्रार्थना आदि झंकृत है। एक ही स्वर है- ब्रह्म का, ज्ञान का, आत्म-ज्ञान का।

**हिन्दू धर्मशास्त्र**

**अपने धर्म ग्रंथों को जानें**

ईशोपनिषद् में ईश्वर को ब्रम्हांड में व्याप्त कहा गया है, जबकि मनुष्य को एक निमित्त बनकर ईश्वरीय कार्य के लिए जीवन जीने की ओर संकेत किया गया है। 'आत्मा' को परमात्मा का अंश माना गया है, और कहा गया कि वह एक साथ, एक ही समय में भ्रमणशील है, साथ ही अभ्रमणशील भी। वह पास है और दूर भी। यहां उसे कई विशेषण दिए गए हैं, जैसे - वह सर्वव्यापी, अशरीरी, सर्वज्ञ, स्वजन्मा और मन का शासक है।

इस उपनिषद् के अंतिम श्लोकों में बड़े ही सुंदर उपमान आते हैं जिससे उपासक समझ सके, अनुभव कर सके कि वह स्वयं ही ब्रह्म स्वरूप है और अंतिम श्लोकों में कहा गया है कि यह शरीर मृत देह बनकर अग्नि में और प्राण वायु में मिलकर भस्म हो जाता है, तब अपने कृत कर्म ही ध्यान रहते हैं। और अग्नि से प्रार्थना की गई है कि पंचभौतिक शरीर के राख में परिवर्तित हो जाने पर वह उसे उसके उत्तम कर्मों के कारण दिव्य पथ से चरम गंतव्य की ओर उन्मुख कर दे। आत्मा-परमात्मा सम्बन्ध को समझने के लिए इस उपनिषद् का अध्ययन अवश्य करें। ◆◆◆

## भारत की प्रबल...

पृष्ठ ३ से...

स्वामीजी ने मुस्कुराते हुए कहा, 'यीशु ने अपने शिष्यों के पांव धोए थे!' निवेदिता बोलने ही वाली थीं कि 'लेकिन वह अंतिम बार था'। पर वह बोल ही नहीं पायीं। पर वह वैसा ही था भले ही वह (निवेदिता) उसे जान नहीं रही थी। स्वामीजी ने उनके ऊपर आशीषों की वर्षा कर दी, और वह खुशी से अपने स्थान पर वापस आ गईं।

निवेदिता ने ४ जुलाई को स्वप्न देखा कि श्री रामकृष्ण दूसरी बार अपना शरीर त्याग रहे हैं। दूसरे दिन प्रात: बेलूर मठ से एक संन्यासी स्वामीजी के गत रात्रि देहत्याग का सन्देश देने आया। तत्क्षण निवेदिता की आँखों के सामने सारा संसार खाली हो गया। वह तुरंत मठ की ओर दौड़ीं।

५ जुलाई की संध्या स्वामीजी का पार्थिव शरीर दाह संस्कार के लिए लाया गया। स्वामीजी का शरीर गेरुए वस्त्र में लपेटा गया था। निवेदिता ने सोचा कि अगर उसके पास वह वस्त्र होता तो उसे वह स्वामीजी के अत्यंत प्रिय शिष्य जोसफिन मेक्लिऑड को स्मृति चिन्ह के लिए भेज पातीं। वह पूरे समय जलती चिता को देखते हुए बैठी रहीं। उस समय संध्या के ६ बजे थे। तभी उन्होंने महसूस किया कि कोई उनकी बांह खींच रहा है। निवेदिता ने पीछे पलट कर देखा, और उस वस्त्र का एक टुकड़ा अपने पैरों के पास पड़ा हुआ पाया। उन्होंने उसे जोसफिन मेक्लिऑड को देने के लिए सम्भाल कर उठा लिया।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा था, 'ऐसा हो सकता है कि मैं अपने शरीर से बाहर जाना अच्छा समझूं, ठीक उसी प्रकार जैसे कोई अनुपयोगी परिधान को छोड़ देता है। पर मैं काम करना बंद नहीं करूंगा। मैं लोगों को तबतक प्रेरणा देता रहूंगा जब तक संसार यह न समझ ले कि वह ईश्वर के साथ एक है।' निवेदिता ने महसूस किया कि अब तक स्वामीजी एक शरीर में बंद थे। अब वह बंधन समाप्त हो गया है। अब वह उन सबके द्वारा काम कर सकते हैं जो उनका नाम लेते तथा उनके विचारों का अनुसरण करते हैं। निवेदिता कार्य में अपनेआप को झोंक दिया। उन्होंने अपने एक मित्र को प्रार्थना की स्थिति में लिखा, 'वह (स्वामीजी) मृत नहीं हैं। वह हमेशा हमारे साथ हैं। मैं दुखी नहीं हो सकती। मैं केवल कार्य करना चाहती हूं।' स्वामी विवेकानन्द के बाद ९ वर्षों तक वह राष्ट्रीय चेतना जगाने के उत्कट कार्य में लगी रहीं। उन्होंने हर क्षेत्र में- साहित्य, कला, विज्ञान, स्वतंत्रता आन्दोलन, शिक्षा, दर्शन, सबमें अपनी छाप छोड़ी। उन्होंने इन क्षेत्रों के लोगों को 'राष्ट्र सर्वोपरि है' यह मानने के लिए प्रेरित किया। ◆◆◆

(क्रमश:)

## विश्वबंधुत्व दिन

पृष्ठ १ से...

स्वामी विवेकानन्द का विश्व को संदेश था - **'युद्ध नहीं, सहायता', 'विनाश नहीं, सृजन', 'कलह नहीं, शांति' और 'मतभेद नहीं, मिलन'!**

**हर स्थान पर मनाया जाए 'विश्वबंधुत्व दिन'**

११ सितम्बर, १८९३ को पहली बार पश्चिमात्य श्रोता समाज ने स्वामी विवेकानन्दजी के माध्यम से विश्वबंधुत्व का संदेश को समझा था। इसलिए विवेकानन्द केन्द्र के संस्थापक श्री एकनाथजी रानडे यह चाहते थे कि यह दिन 'विश्वबंधुत्व दिन' के रूप में मनाया जाए। बनावटी एकता अपने व्यक्तित्व और परम्परागत मूल्यों को नष्ट करती है, किन्तु एकात्मता विविध समुदायों की विशेषताओं को बनाए रखते हुए बंधुत्व के सूत्र में बांधती है। इसलिए इस दिन का संदेश उनके लिए भी है जो हठधर्मी है और मतांतरण के माध्यम से विविध जनजाति समुदायों की मान्यताओं और संस्कृति को नष्ट करने का प्रयास करते हैं। इसलिए भारत के प्रत्येक नगर, ग्राम, महाविद्यालय, विद्यालय तथा सार्वजनिक स्थानों के साथ ही विश्वभर में यह विश्वबंधुत्व दिवस मनाया जाना चाहिए। ◆◆◆

बीज-२१ :: जुलाई, २०१८

ॐ

# धर्मबीज

dharmabeej@gmail.com

मल्होत्रा धर्मबीज दान द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रक

भारत राष्ट्र का गौरवशाली दिन ११ सितम्बर

# विश्वबंधुत्व दिन

अपने ओजस्वी वाणी से भारत की महिमा को विश्वपटल पर आलोकित करनेवाले स्वामी विवेकानन्द का सन्देश समूची मानवता के लिए अनमोल धरोहर है। दुनियाभर के महान ज्ञानी, विज्ञानी, चिंतकों, कलाकारों और विशेषकर युवाओं के हृदय को स्वामीजी के शक्तिदायी विचार आंदोलित करते रहे हैं। फिर भी आज भारत सहित विश्व के बहुसंख्यक लोग स्वामीजी के संदेशों से अवगत नहीं हैं। इसलिए अमेरिकी लेखिका एलिनोर स्टार्क अपने पुस्तक "The Gift Unopened : A new American Revolution" में लिखती हैं कि ''क्रिस्टोफर कोलम्बस ने अमेरिका की भूमि का आविष्कार किया, परन्तु स्वामी विवेकानन्द ने अमेरिका की आत्मा का आविष्कार किया।''लेखिका के अनुसार, स्वामी विवेकानन्द की सबसे बड़ी देन वेदान्त है, जो अमेरिकी नागरिकों की अपूर्णता को दूर कर देगा। परन्तु दुर्भाग्य यह है कि वह 'Gift' (भेंट) अब भी 'Unopened' (अनखुली) ही रह गई।

**धर्म ध्वज**

कोलंबस द्वारा अमेरिका की खोज की ४००वीं शताब्दी मनाने के उपलक्ष्य में अमेरिका ने शिकागो शहर में 'विश्वधर्म महासभा' का आयोजन किया था। इस धर्म महासभा के आयोजन का मूल उद्देश्य केवल ईसाई धर्म का वर्चस्व सिद्ध करना था। 'केवल हमारा ही मत सर्वश्रेष्ठ है बाकी सब गलत' ऐसी कट्टरता ही मानव इतिहास में रक्तपात और हत्याओं के लिए कारणीभूत है, इस बात से स्वामी विवेकानन्द अवगत थे।

११ सितम्बर, १८९३ को इस विश्व धर्म सम्मेलन के पहले दिन स्वामी विवेकानन्द ने अपने सात मिनट के छोटे से व्याख्यान से दुनिया को जीत लिया। **'अमेरिका निवासी बहनों तथा भाइयों...'** कहकर उन्होंने अपना उद्बोधन प्रारंभ किया। स्वामीजी के इस प्रसिद्ध एवं प्रथम उद्बोधन का यह प्रथम वाक्य, जिसने वहां के श्रोताओं के हृदय में मानों एक अद्भुत विद्युत तरंगों को प्रवाहित कर दिया था और खड़े होकर समस्त श्रोताओं ने तालियां बजाकर स्वामीजी का अभिवादन किया। यह केवल उद्बोधन की मात्र एक शैली नहीं थी, अपितु स्वामीजी के उन शब्दों में भारत की महान आध्यात्मिक शक्तियां ही मुखरित हुईं। अपने इस भाषण में स्वामीजी ने कहा कि, 'मुझे ऐसे देश का धर्मावलम्बी होने का गौरव है, जिसने संसार को 'सहिष्णुता' तथा 'सभी धर्मों को मान्यता प्रदान' करने की शिक्षा दी है। मुझे एक ऐसे देश का व्यक्ति होने का अभिमान है, जिसने इस पृथ्वी की समस्त पीड़ित और शरणागत जातियों तथा विभिन्न धर्मों के बहिष्कृत मतावलम्बियों को आश्रय दिया है।'

पृष्ठ ४ पर...

भारत वर्ष का महान पर्व

# गुरु पूर्णिमा

आषाढ़ माह की पूर्णिमा को सम्पूर्ण भारत वर्ष में 'गुरु पूर्णिमा उत्सव' के रूप में मनाया जाता है। इसी दिन महर्षि वेदव्यास की जयंती होती है। महर्षि व्यास ने भारतीय चिंतन जो कि सृष्टि में व्याप्त परब्रह्म की प्राप्ति की जिज्ञासा की पूर्ति के लिए महान कार्य किया। उन्होंने लक्षावधि वैदिक ऋचाओं को संकलित और सम्पादित किया, इतना ही नहीं तो उसे उचित ढंग से वर्गीकृत भी किया। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद के साथ ही भागवत पुराण और श्रीमद्भगवद्गीता को समाज के लिए लिपिबद्ध किया। उन्हीं की कृपा है कि आज हम भाषा, ज्ञान, अनुभव और अपनी जिज्ञासा की पूर्ति के लिए जिस प्रकार की भी सहायता चाहते हैं वह भगवान वेदव्यास द्वारा रचित वेदों और १८ पुराण से प्राप्त होता है। ऐसा भी माना जाता है कि वे एक व्यक्ति नहीं वरन् साक्षात् ज्ञान स्वरूप थे। महर्षि वेदव्यास आदिगुरु के रूप में पूजनीय है। इसलिए व्यास पूर्णिमा को 'गुरु पूर्णिमा' के रूप में मनाया जाता है।

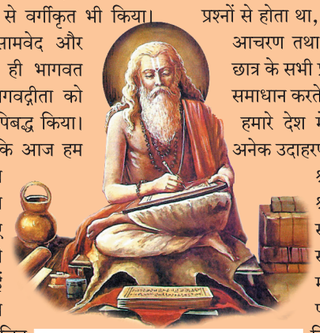

**उत्सरति इति उत्सव:**

**उत्सव वही जो हमें उन्नत करें।**

वैसे तो व्यास अपने आप में एक दायित्व है। शास्त्रों में विद्यमान ज्ञान-दर्शन का अध्ययन कर उसे सामान्य जनता तक इसे सुबोध रूप में प्रचारित करने का कार्य करनेवाले व्यक्ति को भी 'व्यास' कहा जाता था। आज भी कथावाचकों को व्यास के रूप में ही जाना जाता है। यही कारण है कि शास्त्रचर्चा के मंच को भी व्यासपीठ कहते हैं। हर वक्ता से व्यासपीठ की गरिमा की रक्षा की अपेक्षा की जाती है।

प्राचीन काल में गुरुकुलों में विद्यारम्भ व स्नातक के रूप में विद्यासमाप्ति के बाद विदाई दोनों इसी दिन हुआ करते थे। इसी दिन ज्ञान पिपासु छात्र अपनी जिज्ञासा व उसके लिए त्याग करने की तत्परता का भाव लेकर गुरु के आश्रम में आते थे। जिसके अन्दर सभी स्तरों पर समर्पण और तप करने की तत्परता हो वही गुरु की छत्रछाया में रहने का अधिकारी होता था। उसी को 'छात्र' कहा जाता था। मैं कौन हूँ? मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है? छात्र जीवन का प्रारम्भ इन्हीं प्रश्नों से होता था, और गुरु अपने अनुभवों, आचरण तथा ज्ञान कौशल के बल से छात्र के सभी प्रश्नों तथा जिज्ञासाओं का समाधान करते थे।

हमारे देश में गुरु-शिष्य परम्परा के अनेक उदाहरण हैं जिनमें महर्षि वशिष्ठ-श्रीराम, महर्षि संदीपनी-श्रीकृष्ण, सदगुरु कबीर साहब-धनि धर्मदास, समर्थ रामदास-शिवाजी महाराज, श्रीरामकृष्ण परमहंस-स्वामी विवेकानन्द आदि।

वेद तथा उपनिषद् में प्रणव मंत्र 'ॐ' कार को प्रथम स्थान पर पूजने की विधि बताई गई है। यह ॐकार अ, ऊ और म से मिलकर बना है, इसका तात्पर्य है उत्पत्ति, संवर्धन और लय। अपने यहां विनाश की संकल्पना नहीं है। क्योंकि कुछ भी समाप्त नहीं होता। हमारी संस्कृति में विसर्जन कहा जाता है अर्थात विशेषत्व से जिसका सृजन होता है। इसलिए ॐकार विनाश नहीं करता; वह निर्माण, संवर्धन और विसर्जन कर पुन: सृजन करने की शक्ति का स्रोत है। ॐकार का उच्चारण करते ही हम वैदिक परम्परा से जुड़ जाते हैं। ॐकार स्वयं ब्रम्ह का प्रतीक है, इसलिए विवेकानन्द केन्द्र ने ॐकार को गुरु माना है, वहीं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने ज्ञान, त्याग व यज्ञ की संस्कृति की विजय पताका परमपूज्य भगवे ध्वज को गुरु के रूप में प्रतिष्ठित किया है। ◆◆◆

# तैमूर को किसने हराया?

*गत अंक में हमने देखा कि तैमूर लंग ने मार्च, सन् १३९८ ई. में भारत पर ९२,००० घुड़सवारों की सेना लेकर तूफानी आक्रमण कर दिया। तैमूर के आक्रमण की सूचना मिलते ही देवपाल राजा की अध्यक्षता में हरियाणा सर्वखाप पंचायत का अधिवेशन मेरठ में हुआ। इस अधिवेशन में सर्वसम्मति से वीर योद्धा जोगराज सिंह गुर्जर को प्रधान सेनापति बनाया गया, जबकि प्रचण्ड विद्वान् चन्द्रदत्त भट्ट (भाट)को वीर कवि नियुक्त किया गया जिसने तैमूर के साथ युद्धों की घटनाओं का आँखों देखा इतिहास लिखा था।*

**गतांक से आगे...**

प्रधान सेनापति जोगराज सिंह गुर्जर ने सेना को आह्वान करते हुए अपने ओजस्वी भाषण में कहा, ''वीरो! भगवान् कृष्ण ने गीता में अर्जुन को जो उपदेश दिया था उस पर अमल करो। हमारे लिए स्वर्ग (मोक्ष) का द्वार खुला है। ऋषि मुनि योग साधना से जो मोक्ष पद प्राप्त करते हैं,उसी पद को वीर योद्धा रणभूमि में बलिदान देकर प्राप्त कर लेता है। भारतमाता की रक्षा हेतु तैयार हो जाओ। देश को बचाओ अथवा बलिदान हो जाओ, संसार तुम्हारा यशोगान करेगा। आपने मुझे नेता चुना है, प्राण रहते-रहते पग पीछे नहीं हटाऊंगा। पंचायत को प्रणाम करता हूँ तथा प्रतिज्ञा करता हूँ कि अन्तिम श्वांस तक भारत भूमि की रक्षा करूंगा। हमारा देश तैमूर के आक्रमणों तथा अत्याचारों से तिलमिला उठा है। वीरो! उठो, अब देर मत करो। शत्रु सेना से युद्ध करके उसे देश से बाहर निकाल दो।''

यह भाषण सुनकर सेना में वीरता की लहर दौड़ गई। ८०,००० वीरों तथा ४०,००० वीरांगनाओं ने अपनी तलवारों को चूमकर प्रण किया कि, 'हे सेनापति! हम अंतिम श्वांस तक आपकी आज्ञा का पालन करेंगे और देश की रक्षा के लिए हम शत्रुओं पर टूट पड़ेंगे।'

**मेरठ युद्ध :** तैमूर ने आधुनिक शस्त्रों से लैस अपनी बड़ी संख्यक एवं शक्तिशाली सेना लेकर दिल्ली से मेरठ की ओर कूच किया। इस क्षेत्र में तैमूरी सेना को पंचायती सेना ने दम नहीं लेने दिया। दिनभर युद्ध होते रहते थे। रात्रि को जहां तैमूरी सेना ठहरती थी वहीं पर पंचायती सेना धावा बोलकर उनको उखाड़ देती थी। वीर देवियां अपने सैनिकों को खाद्य सामग्री एवं युद्ध सामग्री बड़े उत्साह से स्थान-स्थान पर पहुंचाती थीं। शत्रु की रसद को ये वीरांगनाएं छापा मारकर लूटती थीं। आपसी मिलाप रखवाने तथा सूचना पहुंचाने के लिए ५०० घुड़सवार अपने कर्तव्य का पालन करते थे। रसद न पहुंचने से तैमूरी सेना भूख से मरने लगी। उसके मार्ग में जो गांव आता उसी को नष्ट करती जाती थी। तंग आकर तैमूर हरिद्वार की ओर बढ़ा।

## ॥ धर्मो रक्षित रक्षितः ॥

**हरिद्वार युद्ध :** मेरठ से आगे मुजफ्फर नगर तथा सहारनपुर तक पंचायती सेनाओं ने तैमूरी सेना से भयंकर युद्ध किए तथा इस क्षेत्र में तैमूरी सेना के पांव न जमने दिये। प्रधान एवं उपप्रधान और प्रत्येक सेनापति अपनी सेना का सुचारू रूप से संचालन करते रहे। हरिद्वार से ५ कोस दक्षिण में तुगलुकपुर-पथरीगढ़ में तैमूरी सेना पहुंच गई। इस क्षेत्र में पंचायती सेना ने तैमूरी सेना के साथ तीन घमासान युद्ध किए।

१. उप-प्रधान सेनापति हरबीर सिंह गुलिया ने अपने पंचायती सेना के २५,००० वीर योद्धा सैनिकों के साथ तैमूर के घुड़सवारों के बड़े दल पर भयंकर धावा बोल दिया, जहां पर तीरों तथा भालों से घमासान युद्ध हुआ। इसी घुड़सवार सेना में तैमूर भी था। हरबीर सिंह गुलिया ने आगे बढ़कर शेर की तरह दहाड़ते हुए तैमूर की छाती में भाला मारा जिससे वह घोड़े से नीचे गिरने ही वाला था कि उसके एक सरदार खिज़र ने उसे सम्भालकर घोड़े से अलग कर लिया। (तैमूर इसी भाले के घाव से ही अपने देश समरकन्द में पहुंचकर मर गया)। वीर योद्धा हरबीर सिंह गुलिया पर शत्रु के ६० भाले तथा तलवारें एकदम टूट पड़ीं जिनकी मार से यह योद्धा अचेत होकर भूमि पर गिर पड़ा। उसी समय प्रधान सेनापति जोगराज सिंह गुर्जर ने अपने २२,००० मल्ल योद्धाओं के साथ शत्रु की सेना पर धावा बोलकर उनके ५००० घुड़सवारों को काट डाला। जोगराज सिंह ने स्वयं अपने हाथों से अचेत हरबीर सिंह को उठाकर यथास्थान पहुंचाया। परन्तु कुछ घण्टे बाद यह वीर योद्धा वीरगति को प्राप्त हो गया। जोगराज सिंह को इस योद्धा की वीरगति से बड़ा धक्का लगा।

२. हरिद्वार के जंगलों में तैमूरी सेना के २,८०५ सैनिकों के रक्षादल पर भंगी कुल के उपप्रधान सेनापति धूला धाड़ी वीर योद्धा ने अपने १९० सैनिकों के साथ धावा बोल दिया। शत्रु के काफी सैनिकों को मारकर ये सभी १९० सैनिक एवं धूला धाड़ी अपने देश की रक्षा हेतु वीरगति को प्राप्त हो गए।

३. तीसरे युद्ध में प्रधान सेनापति जोगराज सिंह ने अपने वीर योद्धाओं के साथ तैमूरी सेना पर भयंकर धावा करके उसे अम्बाला की ओर भागने पर मजबूर कर दिया। इस युद्ध में वीर योद्धा जोगराज सिंह को ४५ घाव आये परन्तु वह वीर होश में रहा। पंचायती सेना के वीर सैनिकों ने तैमूर एवं उसके सैनिकों को हरिद्वार के पवित्र गंगा घाट (हर की पौड़ी) तक नहीं जाने दिया। घायल तैमूर हरिद्वार से पहाड़ी क्षेत्र के रास्ते अम्बाला की ओर भागा। उस भागती हुई तैमूरी सेना का पंचायती वीर सैनिकों ने अम्बाला तक पीछा करके उसे अपने देश हरियाणा से बाहर खदेड़ दिया।

वीर सेनापति दुर्जनपाल अहीर मेरठ युद्ध में अपने २०० वीर सैनिकों के साथ लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। इन युद्धों में बीच-बीच में घायल होने एवं मरने वाले सेनापति बदलते रहे थे। कच्छवाहे गोत्र के एक वीर राजपूत ने उपप्रधान सेनापति का पद सम्भाला था। तंवर गोत्र के एक जाट योद्धा ने प्रधान सेनापति के पद को सम्भाला था। एक रवा तथा सैनी वीर ने सेनापति पद सम्भाले थे। इस युद्ध में केवल ५ सेनापति बचे थे तथा अन्य सब देशरक्षा के लिए वीरगति को प्राप्त हुए।

इन युद्धों में तैमूर के ढ़ाई लाख सैनिकों में से हमारे वीर योद्धाओं ने १,६०,००० को मौत के घाट उतार दिया था और तैमूर की आशाओं पर पानी फेर दिया। हमारी पंचायती सेना के वीर एवं वीरांगनाएं ३५,००० देश के लिए वीरगति को प्राप्त हुए थे। ◆◆◆

**(सन्दर्भ-जाट वीरों का इतिहास: दलीप सिंह अहलावत, पृष्ठान्त-३७९-३८३)**

Source-https://www.facebook.com/arya.samaj/

यह प्रश्नोत्तरी धर्मबीज के जनवरी माह के अंक पर आधारित है । सभी प्रश्नों के सहीं उत्तर देनेवाले पहले तीन प्रतिभागियों को ५०० रूपये मूल्य की पुस्तकें व स्वामी विवेकानन्द की एक प्रतिमा/चित्र पुरस्कार के रूप में दी जायेगी तथा उनके नाम और चित्र धर्मबीज के अगले अंक में प्रकाशित किये जायेंगे । आप अपने नाम, पते और चित्र के साथ अपने उत्तर ईमेल द्वारा : dharmabeej@gmail.com को या धर्मबीज, विवेकानन्दपुरम्, कन्याकुमारी-६२१७०२ को भेज सकते हैं ।

## ॥ धर्मबीज प्रश्नोत्तरी ॥

१) स्वामी विवेकानन्द ने भगिनी निवेदिता को बांग्ला, हिन्दू ग्रन्थ तथा ध्यान सिखाने का दायित्व किस संन्यासी को सौंपा था?

२) 'उपनिषद् मानव बुद्धि की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है।' यह किस जर्मन दार्शनिक का कथन है?

३) तैमूर के विरुद्ध युद्ध में प्रधान सेनापति कौन थे?

४) 'नया भारत निकल पड़े...' यह सन्देश विवेकानन्द साहित्य के किस खंड में संग्रहित है?

५) देवपाल राजा का जन्म किस गांव में हुआ, उनका सम्बन्ध किस घराने से था?

**सही उत्तर देनेवाले विजेता**

संजय भूटानी
सोनीपत, हरियाणा

दीपक भोपा
जयपुर, राजस्थान

### अप्रैल, २०१८ अंक की प्रश्नोत्तरी के उत्तर

**१- किस महिला को सऊदी अरब की पहली योग प्रशिक्षक का दर्जा मिला है?**
**उत्तर :** *नोफ मारवाई*

**२- श्री गुरु गोविन्द सिंहजी ने 'पंज प्यारे' कहकर जिन्हें सम्बोधित किया उनके नाम बताइए।**
**उत्तर :** *भाई दया सिंह, भाई धर्म सिंह, भाई मोहकम सिंह, भाई हिम्मत सिंह तथा भाई साहिब सिंह।*

**३- अथर्ववेद की नौ शाखाओं के नाम बताइए।**
**उत्तर :** *पिप्पलाद, स्तौदा, मौदा, शौनक्य, जाजला, जलद, ब्रह्मवद, देवदर्ष तथा चरणवैद्य।*

**४- मार्गरेट नोबल (भगिनी निवेदिता) की दीक्षा कब हुई, स्वामीजी ने उन्हें किसकी प्रतिमा भेंट की?**
**उत्तर :** *२५ मार्च, १८९८, गौतम बुद्ध*

**५- स्वामी जी के अनुसार, 'अपने देशवासियों में सहस्त्रों दोष दिखाई दे, पर हमें ध्यान रखना है कि...'**
**उत्तर :** *स्वामीजी के अनुसार, अपने देशवासियों में सहस्त्रों दोष दिखाई दे, पर हमें ध्यान रखना है कि उनमें हिन्दू-रक्त हैं।* ◆◆◆



# भारत की प्रबल समर्थक 'निवेदिता'

**हमने पिछले अंक में देखा कि स्वामी विवेकानन्द के कठिन प्रशिक्षण और अपने सच्चे प्रयास तथा उद्देश्य के प्रति प्रामाणिकता के कारण भगिनी निवेदिता ने अपने गुरु से ज्ञान प्राप्त किया और पूर्णतया परिवर्तित हो गईं।**

कलकत्ता में भगिनी निवेदिता के द्वारा संचालित होनेवाले विद्यालय को प्रारंभ करने के लिए स्वामी विवेकानन्द अपने कई मित्रों के पास अपनी पुत्रियों को भेजने का अनुरोध करने गए। पर उन दिनों हिन्दू अपनी पुत्रियों को एक 'मेमसाब' के विद्यालय में भेजना नहीं चाहते थे। अंततोगत्वा तीन बालिकाओं से विद्यालय प्रारंभ हुआ। पर ज्यों-ज्यों लोगों ने यह जाना कि निवेदिता पूरी तरह से हिन्दू थीं, धीरे-धीरे कई बालिकाएं विद्यालय आने लगीं। धीरे-धीरे निवेदिता ने बाल-विधवाओं, स्त्रियों और छोटी बालिकाओं को अपने विद्यालय में पढ़ाना प्रारंभ किया। पर विद्यालय को सुचारू रूप से चलाने के लिए धनराशि हमेशा ही एक समस्या थी।

जब स्वामी विवेकानन्द ने पश्चिम की अपनी दूसरी यात्रा प्रारंभ की, कुछ शिष्यों ने उनका साथ दिया। निवेदिता उनमें से एक थीं। निवेदिता अपने विद्यालय के लिए राशि एकत्रित करने के लिए पश्चिम जा रहीं थीं। लन्दन में लोग उनकी सामान्य वेशभूषा देखकर दंग रह गए। उन्होंने सफेद फलालैन (white flannel) का एक सामान्य सा गाउन पहना हुआ था और कमर पर कटिवस्त्र लपेटा हुआ था। उनके गले में हमेशा माला सुशोभित रहती थी। मात्र कुछ वर्षों पूर्व उन्होंने किसी अन्य अंग्रेजी महिला के परिधान में निवेदिता को देखा था। दूसरी ओर उन्होंने निवेदिता को भारत के लोगों की प्रशंसा करते देखा। उन लोगों (पश्चिम) ने इसे पसंद नहीं किया। फिर भी, भारत के लोगों के प्रति उनके सतत कार्य ने उनके लिए 'भारत के लिए चैम्पियन' नाम प्राप्त कर लिया। लन्दन के एक संवाददाता ने लिखा, 'एक अनपेक्षित स्थान से पुराने समय के समर्थकों (चैम्पियनों) के पथ का अनुसरण करनेवाली भारत के लिए एक समर्थक का उदय हुआ है। यह समर्थक किसी सुदूर देश से नहीं है, यहां तक कि अनभिज्ञ लोगों के बीच से भी नहीं है और न ही पुरुषवादी समाज से आई है। वह एक महिला है जो भारत की शासकशक्ति से सम्बंधित है। एक असाधारण क्षमता से युक्त धनी महिला जिसने भारतीय स्त्रियों की सेवा के लिए इंग्लैंड में अपना उज्जवल करियर छोड़ दिया। उसका नाम सुश्री मार्गरेट नोबल है और भले ही वह भारत में मात्र १८ माह ही रही है, पर उन्होंने उतने समय में ही उन लोगों की तुलना में, जिन्होंने भारत में कई वर्ष व्यतीत किए हैं उनसे अधिक वास्तविक भारतीय जीवन को समझा।'

निवेदिता ने सोचा था कि वह व्याख्यान देने तथा श्रोताओं के दान के माध्यम से अपने विद्यालय के लिए अमेरिका में कुछ धन अर्जित कर लेंगी। पर अमेरिका में लोग दार्शनिक तथा रहस्यमय भारत के बारे में चर्चा करती निवेदिता को पसंद नहीं करते थे। संभवत: लोग उनके मुख से भारत की आलोचना पसंद करते, अपर उनके पास

## ॥ धर्मकथा ॥

भारत और उसके लोगों के लिए मात्र प्रशंसा ही थी। लम्बे पहनावे में उनकी सामान्य उपस्थिति वहां अटपटी सी लग रही थी। उन्हें हार स्वीकार नहीं था और झिड़कियों को मात्र उस खेल का हिस्सा माना जिसे वह जितना चाहती थीं। लोग उनके सार्वजनिक व्याख्यान के लिए उत्सुक नहीं थे। तभी एक दिन यह बदल गया।

वह एक सार्वजनिक कार्यक्रम में वह श्रोता की हैसियत से 'सम्पूर्ण विश्व में अंग्रेजी संस्कृति के प्रसार का अमेरिकी दायित्त्व' विषय को सुनाने गई थीं। जब सभा प्रारंभ हुई, निवेदिता मंच पर गई और व्याख्यान दिया। सबने उसे ध्यान से सुना। और उसके बाद उनका नाम समाचार पत्रों में था। संवाददाता उनका इन्टरव्यू मांगने के लिए आने लगे। उसके बाद लगातार सात महीनों तक एक व्याख्याता के रूप में उनकी मांग होती रहीं।' और 'निवेदिता पारस्परिक सहयोग समाज' (Nivedita Mutual Assistance Guild ) की स्थापना हुई।'

निवेदिता ने ब्रुक्किलन के प्राप्त इंस्टिट्यूट में 'हिन्दू स्त्री का आदर्श' विषय पर एक व्याख्यान दिया। स्वामी विवेकानन्द विभिन्न स्थानों पर यात्रा कर रहे थे। संयोग से वह व्याख्यानवाले दिन ही वहां पहुंच गए। इसलिए स्वामीजी भी उस व्याख्यान में उपस्थित हुए। वे पश्चिमी श्रोताओं के मध्य अकेले भारतीय थे। उन्होंने पाया कि वह व्याख्यान 'मर्मभेदी, उत्कट और सामान्य था- हिन्दू व्याख्याता से अधिक हिन्दू, उनकी आत्मिक भूमि के बारे में बोलता हुआ- प्रकाश की तरह जाज्वल्यमान' कृतज्ञता और संतुष्टि से स्वामीजी के आंसू निकल पड़े कि भारत के प्रति उनका प्रेम उनकी आध्यात्मिक पुत्री निवेदिता में भी प्रविष्ट हो चुका है।

इन यात्राओं के मध्य दूसरा महत्त्वपूर्ण घटनाक्रम तब हुआ जब निवेदिता, श्रीमती सारा बुल एवं स्वामी विवेकानन्द न्यूयॉर्क के पास श्री लेग्गेट्ट के रिडले मैनर में थे। स्वामी विवेकानन्द उस कमरे में गए जहां श्रीमती बुल एवं निवेदिता थीं। स्वामीजी के पास गेरुआ कपड़ा था। उसे उन्होंने श्रीमती बुल को दिया और उसके बाद उन्होंने बुल एवं निवेदिता दोनों को यह कहते हुए आशीर्वाद दिया कि 'मैंने तुम्हें वह सारा कुछ दे दिया जो मुझे रामकृष्ण परमहंस ने दिया था। जो मेरे पास एक स्त्री- माँ के माध्यम से आया, उसे मैंने तुम दोनों स्त्रियों को दे दिया। इसके साथ तुम लोग जो कर सकती हो वो करो।'

अगले दिन श्री लेग्गेट्ट के साथ रेल्वे स्टेशन जाते समय उन्होंने निवेदिता से कहा कि वह (निवेदिता) जब भी कभी यात्रा पर जाएं या कोई नया काम करें 'दुर्गा-दुर्गा' का उच्चारण करें। निवेदिता ने इसे याद कर लिया और पूरा जीवन उसका अनुसरण किया। भारत लौटने पर निवेदिता ने अपना विद्यालय का कार्य पुन: प्रारंभ किया। उनका बागबाजार का स्थान उस समय के महान लोगों के मिलने का स्थान बन गया। वहां उन सबका स्वागत था जिसके भी हृदय में भारत के कल्याण की बात थी। उसी समय स्वामी विवेकानन्द की एक अमेरिकी शिष्या क्रिस्टीन ग्रीनस्टेल ने भी निवेदिता के कार्य में योगदान दिया। निवेदिता इस प्रकार अन्य राष्ट्रीय महत्त्व की गतिविधियों को करने के लिए विद्यालय के कार्य से अपेक्षाद्धत मुक्त हो गईं। स्वामी विवेकानन्द ने भी कई बार विद्यालय का भ्रमण किया।

२ जुलाई को स्वामीजी से मिलने बेलूर मठ गईं। भोजन के अंत में जब वह हाथ धोने गई तो स्वामीजी ने उनके हाथों पर पानी डाला। निवेदिता अचम्भित, मना करते हुए कहा, 'स्वामीजी, यह सब मुझे आपके लिए करना चाहिए न कि आपको मेरे लिए।'

पृष्ठ ४ पर...